दादा भगवान परिवार का

मई - २०२३

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकीय

मित्रों,

वेकेशन में घूमने जाना किसे पसंद नहीं है?! हमारी तरह डीडीमा जंगल के ऐनिमल्स को भी घूमने जाना बहुत पसंद है। और इस समर वेकेशन में उन्हें एक अनोखे तरीके से अनोखी जगहों पर घूमने जाने का चान्स मिला है।

ये जगहें ऐसी हैं कि जहाँ कोई फ्लाइट, रॉकेट या स्पेस-शटल नहीं जा सकता और किसी टेलिस्कोप से इन्हें देखा नहीं जा सकता। लेकिन हाँ, दादा भगवान को ये सभी जगहें दिखाई दे गई थीं। और उन्होंने इन जगहों का वर्णन भी किया है।

वर्ल्ड की जीऑग्राफी तो हम सभी ने पढ़ी ही है। तो चलो, इस अंक में वर्ल्ड के ग्रेटेस्ट साइन्टिस्ट द्वारा कही गई ब्रह्मांड की जीऑग्राफी को एक फैन्टैस्टिक तरीके से समझते हैं!

- डिम्पल महेता

छुट्टियों... का... मज़ा...

वर्ष : ११ अंक : २

अखंड क्रमांक : १२२

मई - २०२३

....

संपर्क सूत्र

बालविज्ञान विभाग

त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,

अहमदाबाद - कलोल हाइवे,

मु.पो. - अडालज,

जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात

फोन : ९३२८६६११६६/७७

email:akramexpress@dadabhagwan.org

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Multiprint
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2023, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

अक्रम एक्सप्रेस

आज 'फेरी वेदर' सिनेमा, 'चिली ऐन्ड चील' कैफे तथा 'कल्पटॉप लाइब्रेरी' सब सुनसान हैं। क्योंकि सभी ऐनिमल्स डीडीमा जंगल के तालाब पर इकट्ठा हुए हैं।

सम्मेद शिखर की लंबी ट्रिप के बाद, थीओ ऐन्ड फ्रेन्ड्स ने कुछ ऐसा किया है जिसे जानने के लिए पूरा जंगल इकट्ठा हुआ है। सबसे अधिक खुश आलु और चिली हैं क्योंकि इस बात की शुरुआत उनसे हुई है।

बात ऐसी है कि नवम्बर २०२२ में जन्मजयंती से लौटने के बाद, आलु और चिली के फैन लिस्ट में ज्ञानियों (दादा, नीरू माँ, पूज्यश्री) के साथ सीमंधर स्वामी भी ऐड हो गए हैं। जब से उन्होंने थीओ ऐन्ड फ्रेन्ड्स को सीमंधर स्वामी और महाविदेह क्षेत्र की बातें बताई हैं तब से रिज़ो को किसी भी तरह वहाँ जाना है। एक नई दुनिया देखने! लेकिन वहाँ कोई फ्लाइट जाती ही नहीं है, तो क्या करें?

इसलिए रिज़ो ने कल्पटॉप पर रिसर्च शुरू किया। जितनी बातें पता चलीं वे इकट्ठी करता गया। बातें इकट्ठी करते समय उसे सिर्फ महाविदेह ही नहीं बल्कि पूरे विश्व की, ब्रह्मांड की अद्‌भुत त बातें जानने को मिली। ऐसी बातें पता चलीं जिनके बारे में उसने कभी नहीं सुना था!

पूरा रिसर्च (वर्क) लेकर रिज़ो पहुँचा, ज़ोई, थीओ तथा जिफ्फ़ी के पास! सब ने मिलकर उस रिसर्च का एक रोचक जर्नल बनाया है। ज़ोई ने मज़ेदार गेम्स रेडी की, जिफ्फी ने सुन्दर चित्र बनाए और थीओ ने पूरे जर्नल का एडिटिंग किया। जर्नल में ब्रह्मांड की आश्चर्यजनक रहस्यमयी बातों के साथ थीओ, रिज़ो, जिफ्फी और ज़ोई ने जो बातें की उन्हें भी रखा है।

इस नए प्रकार के जर्नल को लेने डीडीमा जंगल के सभी ऐनिमल्स तालाब के पास इकट्ठा हुए हैं। तो चलो, आलु और चिली के साथ हम भी इस जर्नल के पन्ने पलटकर ब्रह्मांड के रहस्यों को जानें।

ब्रह्मांड क्या है?

ब्रह्मांड बहुत विशाल है। मनुष्य कमर पर दोनों हाथ रखकर दोनों पैर चौड़े करके खड़ा हो, उस आकार का ब्रह्मांड है।

नाभि का हिस्सा है, वह मध्यलोक कहलाता है। उसमें पंद्रह क्षेत्र हैं। पाँच भरतक्षेत्र, पाँच महाविदेह क्षेत्र, और पाँच ऐरावत क्षेत्र।

नीचे के भाग में सात नर्कगति हैं।

ऊपर के भाग में बारह देवगति हैं।

उसके भी ऊपर, तालू के भाग में (सिर के ऊपर) चंद्रमा के आकार का सिद्धक्षेत्र है।

Join the Dots !

डॉट्स जॉइन करके इमेज को पूरा कीजिए। पेज नं ४ पर से ब्रह्मांड क्या है? यह पढ़कर इमेज के साथ दिए गए एरो पर लेबल कीजिए।

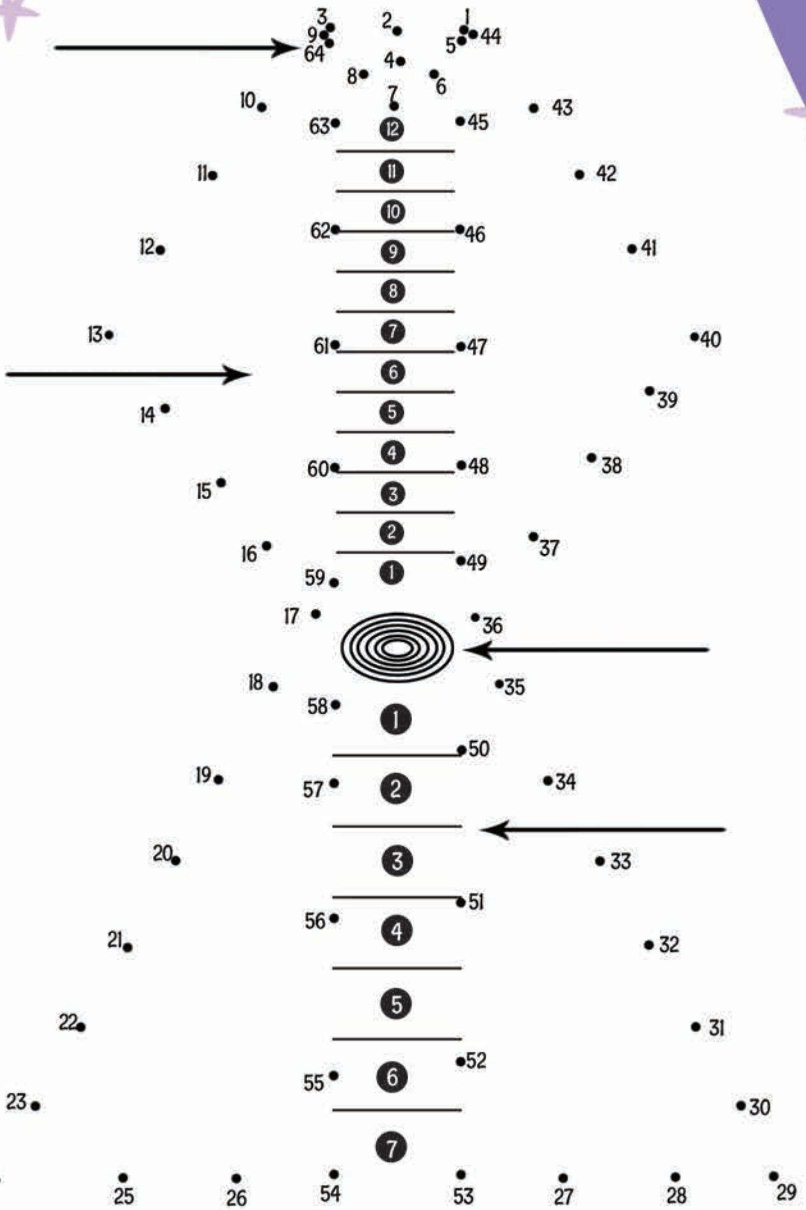

सिद्धक्षेत्र

सिद्धक्षेत्र में अनंत सिद्ध भगवंत विराजमान हैं। जैसे कि राम भगवान, महावीर भगवान आदि सिद्ध भगवंत कहलाते हैं।

सिद्धक्षेत्र में जाने के बाद, सभी आत्माएँ अनंतकाल (जिसका अंत नहीं है) तक अपने अनंत-अनंत सुख में रहते हैं। सिद्धक्षेत्र में जाने के बाद कोई वहाँ से वापस नहीं आता। वहाँ रहकर पूरा ब्रह्मांड देखते हैं, जानते हैं, और आनंद में रहते हैं।

देवगति

देवगति यानी देवों का स्थान।

अलग-अलग प्रकार के देवी-देवता होते हैं जैसे कि, व्यंतर देव, भुवनवासी देव, वैमानिक देव तथा ज्योतिष्क देव।

सूर्य, चंद्र, ग्रह, नक्षत्र ये सभी ज्योतिष्क देव कहलाते हैं। अंबा माताजी, पद्मावती देवी वैमानिक देव हैं।

भूत, यक्ष, राक्षस, पिशाच सब व्यंतर देव कहलाते हैं।

कुछ देव पहाड़ों पर रहते हैं और कुछ देव नदियों में भी रहते हैं।

देवगति में इतना अधिक सुख होता है कि देवी-देवता भी सुख से ऊब जाते हैं।

ज्ञानी को मिलने की बात से जिफ्फ़ी की आँखों में आँसू आ गए। आँसुओं से भीग जाने के डर से थीओ और रिज़ो उसके लिए टिश्यू लेने दौड़े।

नर्कगति

नीचे सात नर्कगति हैं। चार गरम हैं और तीन ठंडी हैं।

नर्कगति में भयंकर दुःख होते हैं। वहाँ शरीर पारा (मरक्युरी) जैसा होता है। शरीर कटता है और फिर से जुड़ जाता है। लेकिन मृत्यु नहीं होती। इसलिए वेदना भुगतनी ही पड़ती है।

नर्कगति यानी उम्रकैद की सजा।

मध्यलोक

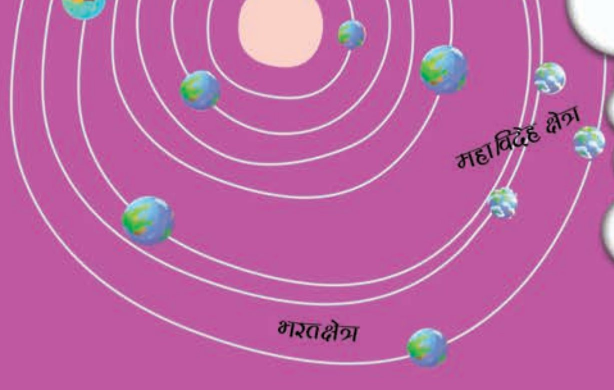

मध्यलोक में पंद्रह क्षेत्र हैं। पाँच भरतक्षेत्र, पाँच महाविदेह क्षेत्र और पाँच ऐरावत क्षेत्र। हमारा क्षेत्र भरतक्षेत्र कहलाता है।

भरतक्षेत्र तथा ऐरावत क्षेत्र दोनों एक समान हैं। वहाँ सबकुछ हमारी पृथ्वी जैसा ही होता है। और वहाँ अभी पाँचवाँ आरा चल रहा है।

पाँचों महाविदेह क्षेत्र में हमेशा चौथा आरा ही रहता है। वहाँ हमेशा तीर्थंकरों की हाज़िरी होती है।

मैप टू सिद्धक्षेत्र

1. चलो, मैपिंग करके सिद्धक्षेत्र तक पहुँचते हैं। लेकिन पहले यह ढूँढ़ते हैं कि नीचे दिए गए शब्द किस क्षेत्र और कौनसी गति से संबंधित हैं।

१. हमारी पृथ्वी ____________

२. हमेशा चौथा आरा ____________

३. सूर्य ____________

४. भयंकर दुःख ____________

५. उम्रकैद की सजा ____________

६. राक्षस, पिशाच ____________

७. वर्तमान में पाँचवाँ आरा ____________

८. नक्षत्र ____________

९. हमेशा तीर्थंकरों की हाज़िरी ____________

2. हर क्षेत्र को एक कलर दिया गया है।

नर्कगति - ब्लैक

देवगति - गोल्डन,

महाविदेह क्षेत्र - ब्लू,

भरतक्षेत्र - ग्रीन।

ये कलर्स नीचे दिए गए मैट्रिक्स में भरे हुए हैं।

अब, ऊपर दिए गए क्षेत्रों के आर्डर (१, २, ३....९) को फॉलो करते हुए सिद्धक्षेत्र तक पहुँचते हैं।

उदाहरण के तौर पर : १ के बाद २ पर जाने के लिए बाँए से दाएँ, ऊपर से नीचे या तिरछी दिशा में जा सकते हैं।

Start

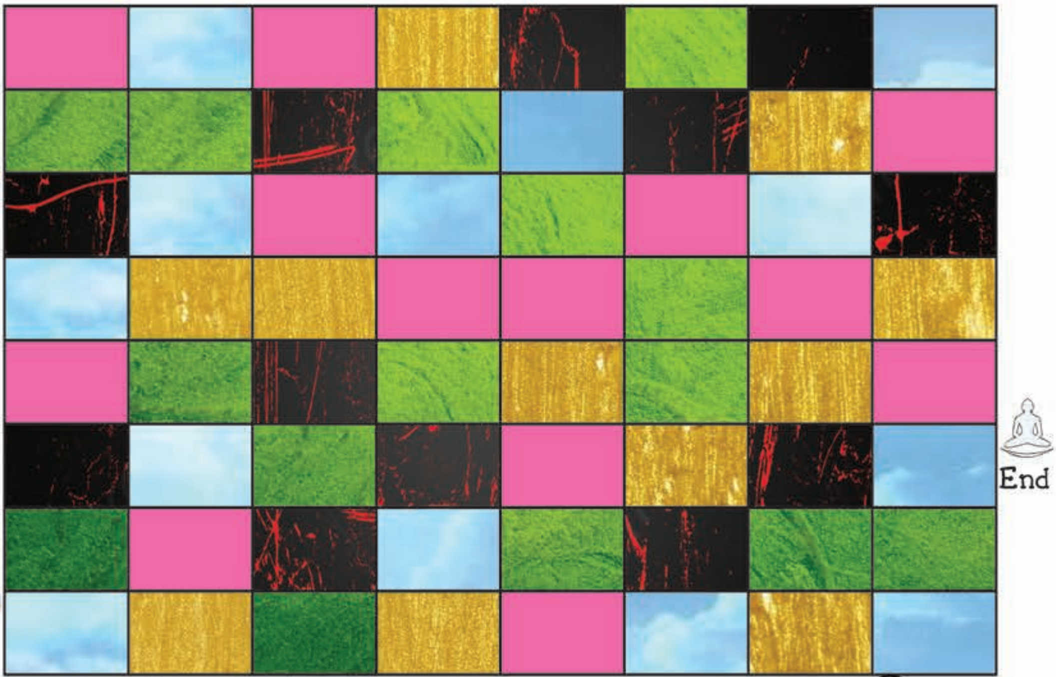

End

Riddle Jumble

नीचे दिए गए प्रत्येक रिडल में चार क्लूस दिए गए हैं। चारों में से एक गलत क्लू है। तो चलो, क्लू के आधार पर ढूँढ़ते हैं कि किस क्षेत्र की बात है और कौनसा क्लू गलत है। और साथ ही उस गलत क्लू को सही करते हैं।

यहाँ हमेशा चौथा आरा,
ब्रह्मांड के नीचे के भाग में स्थित हैं ये।
रहे हाज़िर हमेशा तीर्थंकर,
पाँच हैं कुल पंद्रह में,

____

____

सिद्धों का स्थान मैं,
रहे परमानंद और अनंत सुख,
इच्छा हो तो वापिस आ सकते हैं।
देखते-जानते हैं वहाँ से सब,

____

____

तीन ठंडी, चार गरम हैं,
कुल मिलाकर वे सात हैं,
कटने पर मृत्यु होती है,
पीड़ा भुगतनी ही पड़ती है।

____

____

भूत, पिशाच, यक्ष, राक्षस हैं,
पर्वत, नदी भी स्थान हैं,
सूर्य, चंद्र भी मेरे हैं,
सुख इतना की कोई कभी न ऊबे।

____

____

तो क्या अपने भरतक्षेत्र में से, यानी अभी हम जहाँ हैं वहाँ से, दूसरे भरतक्षेत्र में जा सकते हैं?
नो वे। मेरा रिसर्च कहता है कि हरएक क्षेत्र के बीच में ऐसे ठंडे ज़ोन हैं कि उनके कारण एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में नहीं जा सकते। ऐसी कोई स्पेसशिप बनी ही नहीं है जो एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में ले जाए।
KalpTop

ओह!
लेकिन हम यदि दादा की बात फॉलो करें तो महाविदेह क्षेत्र में चौथे आरे में जा सकते हैं।
लेकिन, ये आरा क्या होता है?
KalpTop

आरा अर्थात् क्या?

आरा यानी कालचक्र का विभाजन किया गया है। जैसे प्रभात, सुबह, दोपहर, शाम, रात, मध्यरात्रि आदि वह दिन-रात के हिसाब से भाग किया गया है, वैसे ही आरा वह कालचक्र के हिसाब से भाग किया गया है।

पहले और दूसरे आरे में, युगलिया अवतार होता है। हज़बेन्ड-वाइफ युगल साथ में जन्म लेते हैं, साथ रहते है और एक दूसरे को दुःख नहीं देते। किसी को दुःख नहीं देते और मरने के बाद देवगति में जाते हैं।

तीसरे और चौथे आरे में, तीर्थंकरों का जन्म होता है। वे जगत को धर्म, ज्ञान, तथा मोक्षमार्ग के बारे में बताते हैं। थोड़ी बहुत लड़ाईयाँ भी होती हैं।

पाँचवें और छठे आरे में तीर्थंकर नहीं होते।

पाँचवें आरे में एक, दो या चार ज्ञानी होते हैं। पाँचवें आरे में धर्म खत्म होता जाता है। लोगों में लड़ाई-झगड़े, वैर सब बढ़ता जाता है।

छठे आरे में धर्म नहीं होता, मंदिर नहीं होते, गुरु नहीं होते, घर-परिवार कुछ भी नहीं होता। मनुष्यों की स्थिति जंगली जानवर जैसी हो जाती है।

पाँच भरतक्षेत्र में और पाँच ऐरावत क्षेत्र में इस तरह, छः आरे बदलते रहते हैं। महाविदेह क्षेत्र में हमेशा चौथा आरा ही रहता है।

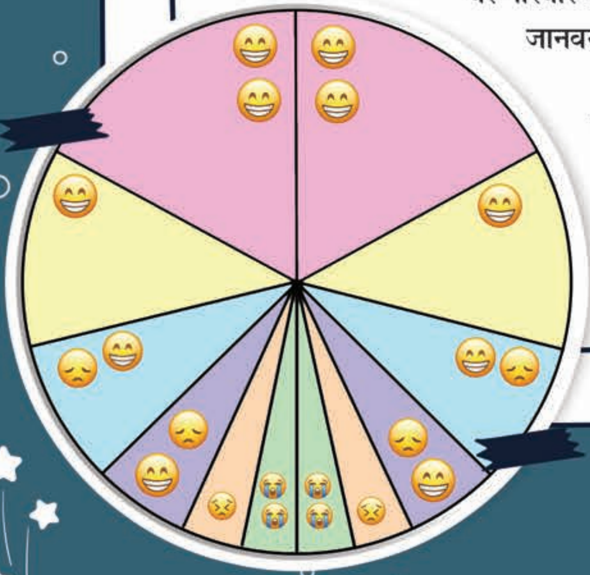

आरा-चक्र

नीचे दिए हुए वाक्यों को ऐल्फाबेट के आधार पर आरा-चक्र के क्रम में सेट कीजिए। आरा-चक्र में छः विभाग हैं जो पहला, दूसरा, तीसरा... ऐसे छः आरे को दर्शाते हैं।

A. घर-परिवार नहीं होता।

B. धर्म नहीं होता।

C. धर्म तथा मोक्षमार्ग की बातें होती हैं।

D. लोगों में लड़ाई-झगड़े बढ़ते हैं।

E. तीर्थंकरों का जन्म होता है।

F. युगलिया अवतार।

G. मनुष्य जंगली जानवर जैसे हो जाते हैं।

H. हज़बेन्ड-वाइफ युगल जन्म लेते हैं।

I. कोई किसी को दुःख नहीं देता।

J. मरने के बाद देवगति में जाते हैं।

K. थोड़ी-बहुत लड़ाईयाँ होती हैं।

L. एक, दो या चार ज्ञानी होते हैं।

M. धर्म खत्म होते जाता है।

N. मंदिर नहीं होते।

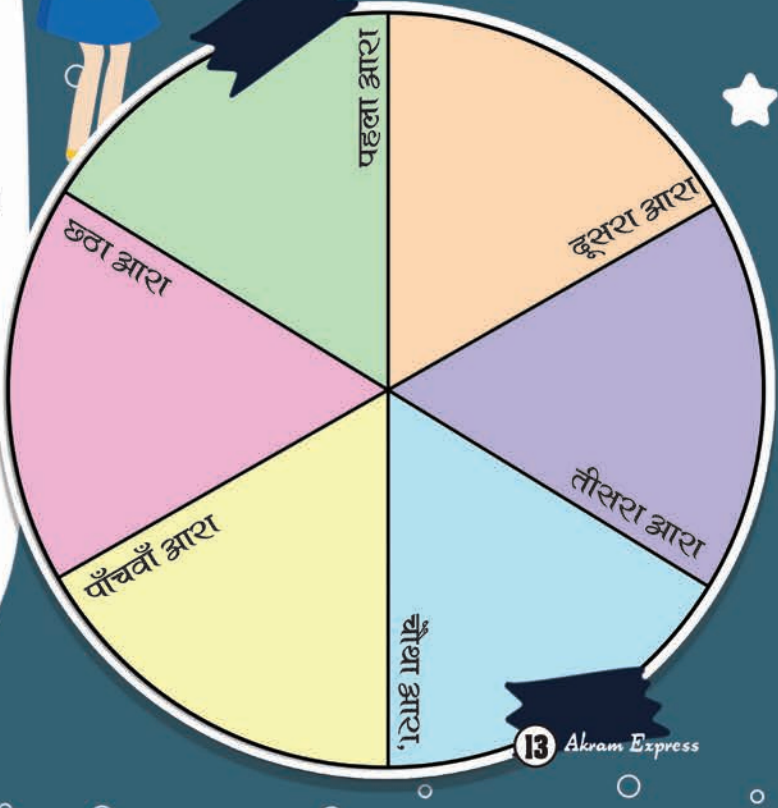

दादाजी कहते हैं...

महाविदेह जाने का रास्ता

प्रश्नकर्ता : महाविदेह क्षेत्र में जाना हो तो कैसे जा सकते हैं?

दादाश्री : चौथे आरे जैसा इंसान बन जाता है, इस पाँचवें आरे के दुर्गुण चले जाते हैं, तब वहाँ जाता है। कोई गाली दे फिर भी मन में उसके लिए खराब भाव न आएँ तब वहाँ जाता है।

चौथे आरे के जो मनुष्य थे, उनके बजाय पाँचवें आरे के लोगों के स्वभाव बिगड़ गए हैं। अब वे मनुष्य (पाँचवें आरे के) यहाँ, किसी को दुःख नहीं दे ऐसे हो जाते हैं, तो फिर क्षेत्र का स्वभाव ऐसा है कि यहाँ से खिंचकर जहाँ चौथा आरा चल रहा है वहाँ चले जाते हैं।

वहाँ महाविदेह क्षेत्र में नित्य चौथा आरा चलता है। और चौथा आरा हो तभी तीर्थंकर होते हैं।

प्रश्नकर्ता : वहाँ पर हमेशा चौथा आरा क्यों रहता है?

दादाश्री : अपने यहाँ जैसे किसी जगह पर हमेशा (उदाः अन्टार्कटिका में) छः महीने के लिए रात और छः महीने के लिए दिन होते हैं, उसी प्रकार वहाँ पर नित्य चौथा आरा रहता है।

अरे, मुझे जब से यह पता चला है तब से मैं रोज यह प्रेयर करता हूँ। फिर भी मुझसे हर्ट हो जाता है। तो क्या मैं कभी भी महाविदेह नहीं जा पाऊँगा?
यदि डीडीमा जंगल में ऐनिमल्स रोज यह प्रेयर करें कि, 'मुझसे किसी को कभी हर्ट न हो।' तो फिर तो...
जिफ्फी, सैड मत हो। जो भी दादाजी की बातें फॉलो करता है वह महाविदेह जा सकता है।
हाँ! हर्ट करने के बाद यदि हम 'सॉरी' फील करते हैं तो हमारी भूल माफ हो जाती है।

Secret Message

एक सिक्रेट मैसेज मिला है। चलो, नीचे दिए गए 'सिम्बल चार्ट' के आधार पर मैसेज को डिकोड करें।

1		को	6		गा	11		नि
2		न	7		खरा	12		दे
3		उसके	8		विदेह	13		महा
4		तो	9		ली	14		दु:ख
5		जाए	10		आए			

Message 1

ई गा और प्रति

____

ब भाव ,

____

वह

____

Message 2

किसी ऐसा हो

____

____

महाविदेह क्षेत्र कहाँ है? कैसा है?

हमारी पृथ्वी से ईशान दिशा में करोड़ों किलोमीटर की दूरी पर महाविदेह क्षेत्र की शुरुआत होती है।

महाविदेह क्षेत्र में मनुष्य की आयु बहुत लंबी होती है। उनकी हाइट भी बहुत बड़ी होती है और सुख भी बेहिसाब होते हैं।

वहाँ भी हमारी दुनिया की तरह दुकानें, खेती-बाडी, व्यापार सभी कुछ है।

लेकिन वहाँ मशीन से चलनेवाले वाहन नहीं हैं, मंत्रो से चलनेवाले वाहन हैं। इसलिए वहाँ के वाहनों में पेट्रोल या डीज़ल की ज़रूरत नहीं पड़ती।

वर्तमान समय में महाविदेह क्षेत्र में बीस तीर्थंकर मौजूद हैं। उनमें से एक हैं सीमंधर स्वामी।

सीमंधर स्वामी की आराधना इसलिए करनी चाहिए क्योंकि वे हमारे भरतक्षेत्र से सबसे नज़दीक हैं और इस क्षेत्र के साथ उनका ऋणानुबंध (कनेक्शन) है। उनकी भक्ति करने से उनके साथ हिसाब बँध जाता है।

हमें भावना करनी चाहिए कि भरतक्षेत्र के हिसाब पूरे करके महाविदेह क्षेत्र में जन्म हो और वहाँ श्री सीमंधर स्वामी भगवान के दर्शन प्राप्त हों।

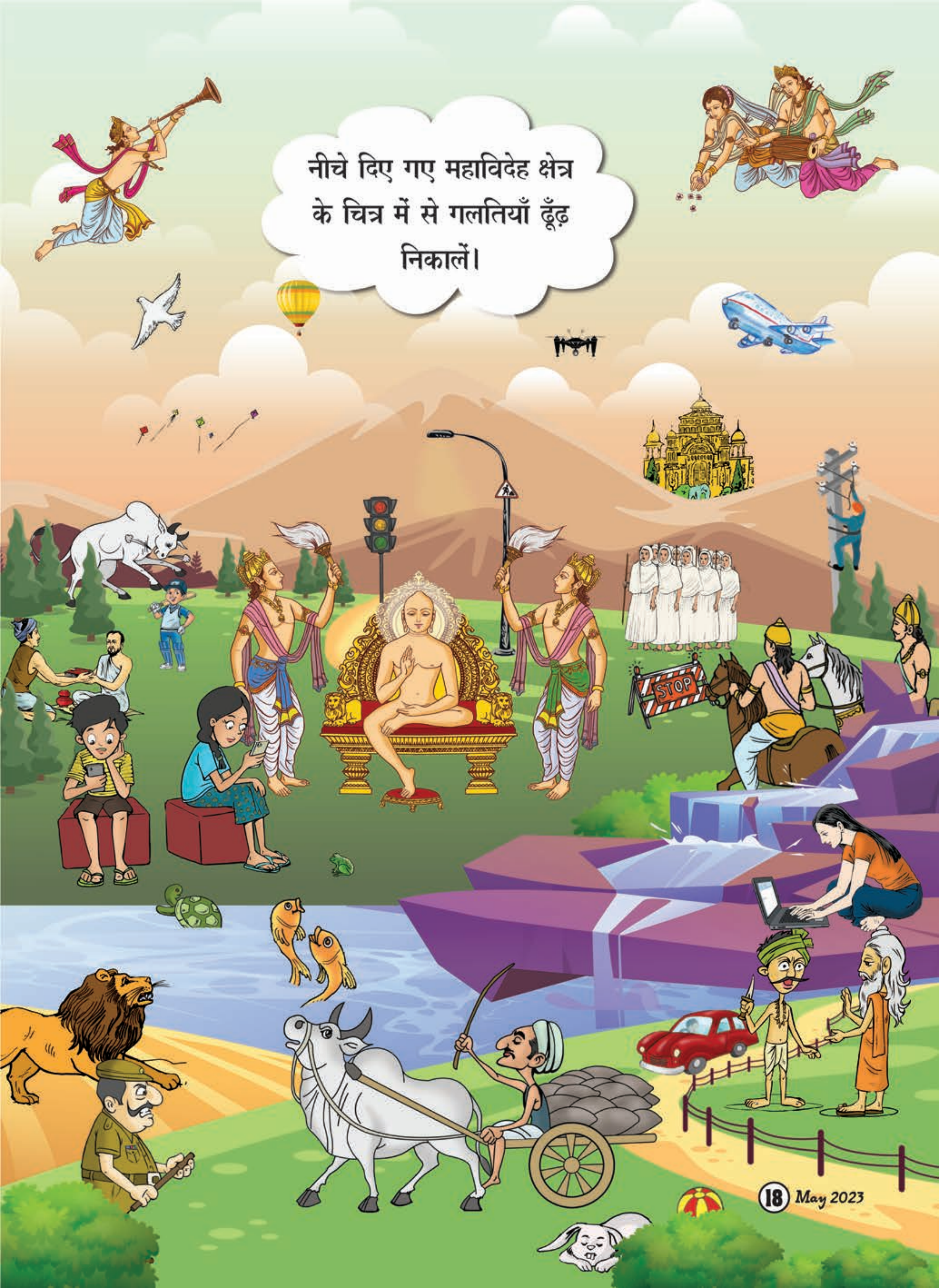
नीचे दिए गए महाविदेह क्षेत्र के चित्र में से गलतियाँ ढूँढ़ निकालें।
STOP

क्या ये बातें पढ़कर आप भी इमैजिन कर सकते हैं कि ब्रह्मांड कैसा होगा? महाविदेह क्षेत्र कैसा होगा? तो बस, एक ड्राइंग शीट लेकर उस पर आपकी कल्पना के अनुसार ब्रह्मांड का चित्र बनाकर उसका फोटो हमें ९३१३६६५५६२ पर भेजिए।

जिसका चित्र (ब्रह्मांड) सबसे सुन्दर होगा उसे मिलेगा एक स्पेशल गिफ्ट!

ड्राइंग भेजने की अंतिम तारीख़ है २० मे

ऐक्टिविटी के जवाब जानने के लिए Scan QR:

Akram Express

May 2023
Year : 11, Issue : 2
Conti. Issue No.: 122

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

४ से १२ वर्ष की आयु के बालकों के लिए आयोजित किए गए समर कैम्प की झलक

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००१५०० पर Whatsapp करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मेगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025